मई 2018

दादावाणी

कीमत ₹ 15

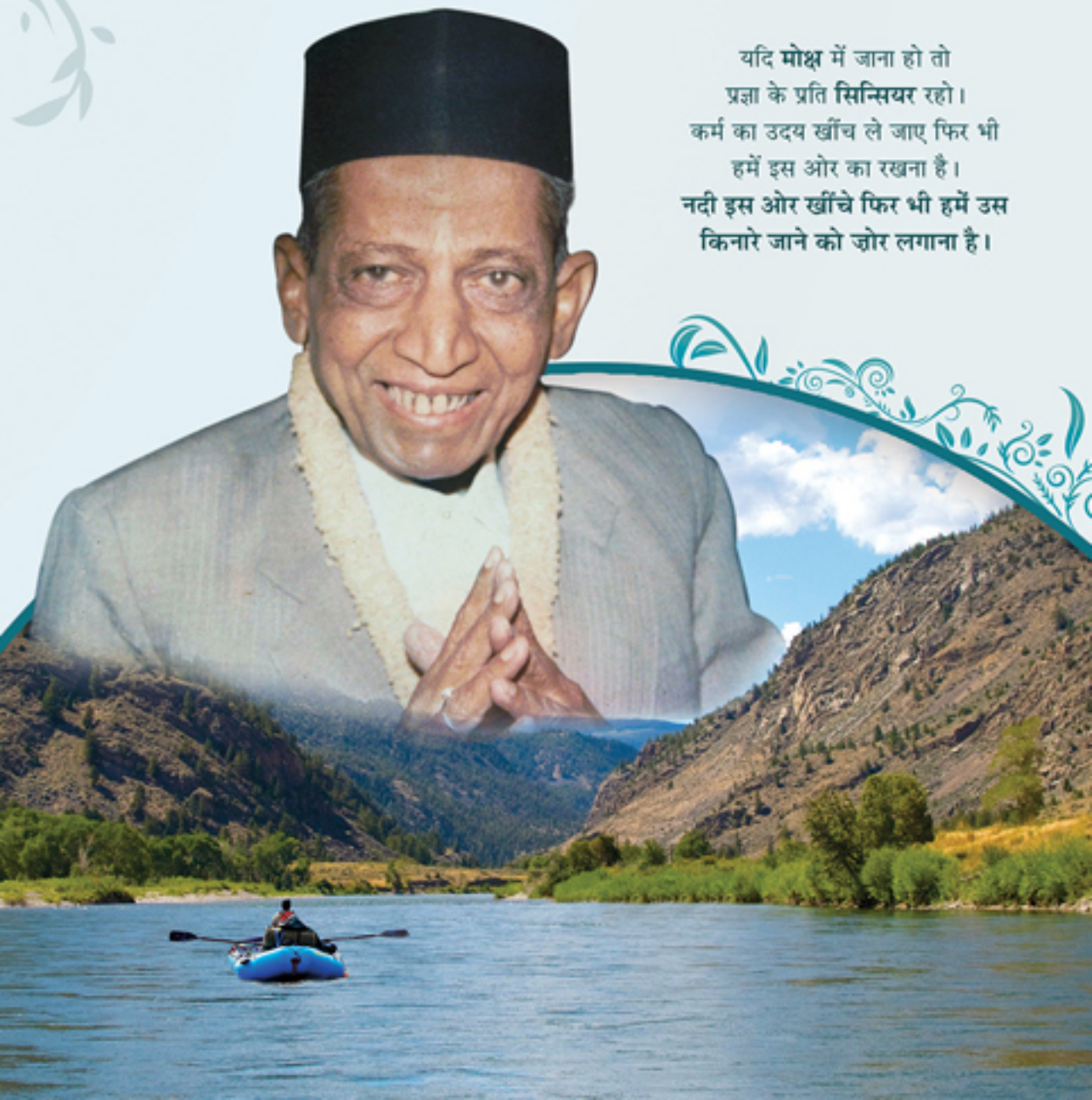

यदि **मोक्ष** में जाना हो तो
प्रज्ञा के प्रति **सिन्सियर** रहो।
कर्म का उदय खींच ले जाए फिर भी
हमें इस ओर का रखना है।
नदी इस ओर खींचे फिर भी हमें उस
किनारे जाने को ज़ोर लगाना है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 13 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 151
मई 2018

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Editor : Dimple Mehta
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.
Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421
Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

छूटने के लक्ष से सिन्सियरिटी

संपादकीय

सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी मोक्ष के मुख्य कारण हैं। अक्रम ज्ञान प्राप्त होने के बाद ये दोनों गुण पूर्ण रूप से उत्पन्न हो सकें, ऐसे हैं अब हमें हर जगह सिन्सियर रहने के भाव होने चाहिए। उस शक्ति का धीरे-धीरे विकास करना है।

हम शुद्धात्मा हो गए हैं इसलिए अब अहंकार का बचाव नहीं करना चाहिए। ऐसा समझ लेना चाहिए कि वह सभी तरह से नुकसानदायक है, अहंकार ऐसा है कि खुद का बचाव कर लेता है। अगर एक बार भी दोष का बचाव किया तो समझो सिन्सियरिटी नहीं रही, दोष का बचाव किया इसलिए शुद्धात्मा नहीं रहा।

विधि करते समय 'मैं शुद्धात्मा हूँ', 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते हैं तो फिर शुद्धात्मा का बचाव करना है या दूसरी तरफ का (दोषों का, अहंकार का, चंदू का) ? शुद्धात्मा की तरफ नहीं चले और दादा से भी छल किया। हमें मोक्ष में जाना है इसलिए अब प्रज्ञा के प्रति सिन्सियर रहना है।

दादा के प्रति कैसे सिन्सियर रह सकते हैं ? आज्ञापालन से। आज्ञा तो बहुत बड़ी चीज़ है। ज्ञानीपुरुष की कृपा व आज्ञा और साथ में अपने निश्चय के प्रति सिन्सियरिटी से सब कुछ बदल सकता है। दादा कहते हैं कि एक भी अभिप्राय दादा से अलग नहीं रखना है। अपनी खुद की समझ को तो जलाकर राख कर देना है, खुद की समझ ही ज्ञानी से अलग कर देती है। सिन्सियर का अर्थ 'भूल रहित' नहीं लेकिन हृदय की एकता है, जुदाई नहीं आने दें।

दादा के प्रति जितनी सिन्सियरिटी उतनी ही उनकी कृपा। जिनमें सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी अधिक होती है, वही परम विनय है। उसके लिए कोई मेहनत नहीं करनी है। समझ-समझकर ही निश्चय को स्ट्रोंग करना है। ध्येय के लिए, दादा के लिए निरंतर भाव, उस ओर झुकाव, वही सिन्सियरिटी है।

परम पूज्य दादाश्री सिन्सियरिटी का बहुत ही सूक्ष्म विवरण करते हुए बताते हैं कि व्यवहार का काम करते-करते, 'दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो' बोलते रहने को सिन्सियरिटी नहीं कहते। जो कुछ बोला जा रहा है, उसे पढ़ा जाए तो उसे सिन्सियर कहा जाएगा। यदि यह जानें कि पढ़ने वाला ठीक से पढ़ रहा है या नहीं तो पूर्ण आत्मा बन जाएगा। परिणाम स्वरूप, आत्म अनुभव का अनोखा सुख बरतेगा!

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री ने स्पष्टता किया है कि महात्मागण ज्ञान में सिन्सियर रहकर किस प्रकार तेज़ी से प्रगति कर सकते हैं। जो महात्माओं के लिए पुरुषार्थ करने में सहायक सिद्ध होंगे, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

छूटने के लक्ष से सिन्सियरिटी

रहे सिन्सियर, धर्म और उसके साधनों के प्रति

प्रश्नकर्ता : दादा! आपकी अभी इस पूर्ण स्थिति तक पहुँचने में आपको कितने साल लगे?

दादाश्री : वह तो अपने आप ही, बट नैचुरल (कुदरती रूप से) हो गया। यह सब तो ऐसा है जैसे ईनाम मिल गया हो! मैंने कुछ भी मेहनत नहीं की। पहले की होगी लेकिन सिन्सियर रहा था। हमेशा सिन्सियर! चित्त, पैसों में नहीं, ममता में नहीं। चित्त सिर्फ धर्म में ही था और यही इच्छा थी कि कैसे छूटूँ? संसार में हर तरह से ऊब चुका था। पैसे होने के बावजूद भी सब तरह से ऊब चुका था। संसार अच्छा ही नहीं लगता था। उसमें मिठास ही नहीं लगती थी, कभी भी मिठास नहीं लगी। आम भी मिठास आने तक ही खाते हैं। आम मीठा हो लेकिन यदि मुझे उसमें मिठास महसूस न हो तो वह मेरे किस काम का?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने से पहले आपने इस चीज़ के लिए, ज्ञान के लिए, किन्हीं साधनों का अवलंबन लिया था?

दादाश्री : हाँ! बहुत से साधनों का, और उन साधनों के प्रति सिन्सियर रहा। तीर्थंकरों द्वारा बताए गए जो साधन हैं, उनके प्रति सिन्सियर रहा। मुझे तीर्थंकरों के प्रति बहुत भाव था। ऐसे सच्चे पुरुष! ऐसा सत्य, कभी नहीं सुना था! अत: जो तीर्थंकर हो चुके हैं, उनकी वाणी और उनकी वीतरागता के प्रति मुझे बहुत भाव था इसलिए उनके बताए हुए सभी साधनों को मैंने अपनाया था।

सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी की वजह से लगता है ताप

प्रश्नकर्ता : आपमें भी पहले इतना अधिक गुस्सा था, उसके बावजूद भी आप आज इस कक्षा तक पहुँच पाए?

दादाश्री : हाँ, वह गुस्सा भी कैसा? गाँव जला दे, ऐसा गुस्सा। यदि कभी कोई बहुत अपमान कर दे न, तो गाँव को भी जला दे! बोलो, ऐसा इंसान या तो नरक में जाता है या फिर इस तरफ चले तो बहुत आगे तक पहुँच जाएगा। अत: यह बहुत कठिन हिसाब था! वह तो अच्छा हुआ कि लोगों ने ठोक पीटकर सीधा कर दिया। सीधा करते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : सीधा करते ही हैं।

दादाश्री : मुझे ठोक पीटकर सीधा कर दिया! इसलिए अब मैं भी लोगों को ठोक पीटकर (समझाकर) सीधा करता हूँ, अंत में सीधा तो होना ही पड़ेगा न!

एक जगह तो पूरा गाँव ही मेरा विरोधी हो गया और हाथ में लकड़ी भी नहीं थी फिर भी मैंने कहा, 'अरे, क्या लड़कियों की तरह खड़े हो? लड़ो न!' इस तरह फिर 'लड़कियों' कहा, चक्कर आ जाएँ ऐसा बोलता था। मेरे पास आते

हुए उन लोगों को हाथ काँप जाते थे, घबराहट हो जाती थी, ऐसा ताप लगता था। शरीर में ऐसा कुछ भी नहीं था, फिर भी ऐसा ताप लगता है। ताप किस चीज़ का? जिनकी सिन्सियरिटी कुछ और ही तरह की है, जिनकी मॉरेलिटी कुछ और ही है, उनका ताप लगता है!

इन्सिन्सियर नहीं हुए कभी भी

हम तो बहुत सख्त इंसान थे! शुरू से ही सख्त रहे हैं। हम तो भगवान ऋषभदेव के लिए भी भारी पड़ गए थे। हमने तो एक ही ज़िद पकड़ी कि हमें तो ऐसा ही चाहिए। जो आपने भरत राजा को दिया है, हमें वही चाहिए। कुछ और नहीं। उन्हें तेरह सौ रानियाँ हैं और बाकी सब को (साधु) बना रहे हैं?

हम सख्त थे फिर भी सब हमसे बहुत खुश थे क्योंकि हमारे जैसा सिन्सियर इंसान मिलना मुश्किल है! हम शुरू से ही सिन्सियर थे, कभी इन्सिन्सियर हुए ही नहीं और शुरू से ही हमारा ओब्लाइज़िंग नेचर (परोपकारी स्वभाव) था। आज से नहीं, भगवान ऋषभदेव के समय से। हमने उल्टा बोला इसलिए यह हमारा जन्म-जन्मान्तर तक चला। उल्टा बोला इसलिए ये सारे कषाय हम पर हावी हो गए थे। भगवान ने कहा था, 'उनकी उपेक्षा करना,' हमने वह नहीं माना।

हम तो साफ-साफ कह देते थे कि आपका ऐसा है, आपका गाढ़ मिथ्यात्व है' ऐसा कह देते थे। उससे ये सभी दोष लगे हैं। वे अभी तक चले। हमें जल्दी भी किस बात की है? जब कुछ दुःख-सुख देख लें, तभी दुःख और सुख की कीमत समझ में आएगी न भाई! अगर हम यों ही वहाँ चले जाएँ तो हमें कैसे पता चलेगा? फिर ऐसा लगेगा कि चलो, फिर से एक चक्कर लगा आएँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यह जो मूल वस्तु है, ऋषभदेव भगवान की, तो उनमें से बीच वाले किसी तीर्थंकर ने आपसे ऐसा नहीं कहा, 'छोड़ो न, माथापच्ची!' और अब मेरे साथ चल, वहाँ ऊपर?

दादाश्री : अब, उन सभी को जल्दी थी। सभी जल्दबाज़ी में थे। ऐसे में हमने ऐसा कहा, 'हमारा जो होना होगा, वह होगा लेकिन हमें तो यही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा! किसी तीर्थंकर ने आप से ऐसा नहीं कहा कि अब रख इस अक्रम मार्ग को एक तरफ और चल हमारे साथ क्रमिक में?

दादाश्री : नहीं! दूसरे तीर्थंकरों के पास अक्रम था ही नहीं। क्रमिक हमें पुसाता नहीं था, वह नहीं पुसाता था! यदि आपका माल हमें नहीं पुसाता है और आपको मेरे साथ सौदा करना है तो जैसा हमें चाहिए, वैसा माल आपको देना पड़ेगा। बाज़ार से लाकर देना पड़ेगा आपको। तो हम तो ऐसे इंसान थे! दुनिया से कुछ अलग!

प्रश्नकर्ता : सिन्सियरली टेढ़े।

दादाश्री : बिल्कुल सिन्सियर। गाली देने वाले के प्रति भी सिन्सियर, कोई मारकर जाए तो उसके प्रति भी सिन्सियर। हाँ..., सभी तरह से सिन्सियर! इसलिए हमने जो परेशान किया, उसके कारण हमें अभी तक यहीं बैठे रहना पड़ा है।

प्रश्नकर्ता : वे परेशान किया उसके कारण।

दादाश्री : अब किसी को परेशान नहीं करते हैं। अर्थात् इस जन्म में अब परेशान करने देते हैं। तुझे जितना परेशान करना है उतना कर।

सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी से प्राप्त हुआ, यह पद

यह एक ही झंझट थी कि, 'कोई मेरा नाम

नहीं ले सकता।' और जब वह गया तो यह पद आया! हाँ, अभी जिस पद पर मैं बैठा हूँ, उसमें मेरे पास दो ही चीज़ें हैं। फुल सिन्सियरिटी और फुल मॉरैलिटी! इन दो चीज़ों के कारण ही मैं इस पद पर बैठा हूँ और भगवान भी मेरे वश में हो गए हैं!

तब जीत पाएँगे जगत् और पाएँगे मोक्ष

यह जगत् जीतना है, तभी मोक्ष में जाने देंगे। जगत् जीतोगे तो मोक्ष जाओगे! जगत् जीते बगैर कोई मोक्ष में नहीं जाने देगा। यदि आप एक ही व्यक्ति के प्रति इन्सिन्सियर रहे तो वह व्यक्ति आपको पकड़ेगा कि, 'ऐय, किधर जा रहा है? नहीं जाना।' और अगर सिन्सियर रहेंगे न, तो सभी हरी झंडी दिखाएँगें और 'नो ऑब्ज़ेक्शन सर्टिफिकेट' भी लिखकर देंगे। अत: एक बार ही सही लेकिन सिन्सियर हो जा, किसी के भी प्रति सिन्सियर हो जा। आप जितनी चीज़ों के प्रति सिन्सियर रहे, उतनी चीज़ें आपने जीत लीं और जितनी चीज़ों के प्रति आप इन्सिन्सियर हो, उतनी चीज़ें आपने नहीं जीती इसलिए सभी जगह सिन्सियर हो जाओ तो आप सब जीत पाओगे।

दुनिया में दो ही चीज़ें सीखनी हैं। एक तो संसार में किसी को दु:ख नहीं देना है और दूसरा, आपके पास जो भी हो, वह दूसरों को दे देना है। सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी को बनाए रखना। लोग सिन्सियर नहीं रहते हैं। दगाबाज़ हो गए हैं और मॉरैलिटी का पालन नहीं करते।

सिन्सियर रहो, सिद्धांत के प्रति

इंसान में सिन्सियरपना नहीं है। अपने 'महात्मा' मेरे पास सिन्सियरली रहते हैं क्योंकि उन्हें खुद को लगता है कि सिन्सियर कहाँ रहना है? जहाँ मेरा हित हो, वहाँ पर सिन्सियर रहना है। जहाँ पर हित नहीं हो, वहाँ पर इंसान सिन्सियर कैसे रह सकता है? लेकिन वहाँ भी धीरे-धीरे उस शक्ति का विकास करना है। सामने वाला व्यक्ति तो अपना चेक बेच सकता है लेकिन हम नहीं बेच सकते। 'टिट फॉर टेट' करने जाएँगे तो हमारे सारे चेक खत्म हो जाएँगे। उसके गाली देने पर समता में रहना है तो उसे कहेंगे कि मैंने वह चेक नहीं भुनाया। और मैं अपने खुद के प्रति सिन्सियर रहा कहा जाएगा। मैं अपने खुद के प्रति और अपने सिद्धांत के प्रति सिन्सियर रहा कहा जाएगा।

रखो भाव, सिन्सियर रहने के

प्रश्नकर्ता : आपके प्रति तो सभी सिन्सियर रहते हैं लेकिन बाहर सभी जगह सिन्सियर रहना चाहिए न?

दादाश्री : एकदम से वैसे नहीं रहा जा सकेगा न! पूर्व में भाव नहीं किए हैं इसलिए एकदम से नहीं रह पाएँगे लेकिन अब सभी जगह सिन्सियर रहने के भाव होने चाहिए। अब अपना हेतु बदल गया है। ऐसा हमें लगना चाहिए कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।'

अगर खुद भाव करके लाया है तो रह सकता है। पूर्वजन्म में भाव किए हों तो रह सकता है। अब इस जन्म में जो भाव किए हैं, उनका फल अगले जन्म में मिलेगा। इस कलियुग में एकदम से सिन्सियर और मॉरल नहीं रह सकते।

अगर सिन्सियर है तो उसके दोष निभा लेंगे

हम तो इतना ही देखते हैं कि इनमें सिन्सियरिटी है या नहीं! फिर भले ही उनमें सौ भूलें हों!

सिन्सियर इंसान में यदि सौ दोष हों फिर भी मैं निभा लेता हूँ। सिन्सियर इंसान मिलना मुश्किल है! यदि ऐसा इंसान मिले और उसमें सौ दोष हों फिर भी निभा लेना पड़ेगा क्योंकि यदि

वह सुधर जाएगा तो काम हो जाएगा न बेचारे का! मेरे पास आकर सुधर जाते हैं, कई लोग सुधर जाते हैं!

सोते समय तकिये को अच्छी तरह से चेक कर लेना चाहिए कि तकिया खिसक तो नहीं जाएगा न और चेक करने के बाद यदि हम तकिया रखकर सो जाएँगे तो वह नहीं खिसकेगा। जबकि ये जीवित व्यक्ति तो खिसक जाते हैं। उनके बजाय तो ये तकिये अच्छे। जिस तरह तकिया सिन्सियर रहता है, यदि उसी तरह इंसान भी सिन्सियर रहे तो फिर हर्ज नहीं है। फिर भले ही भूल हो, उन भूलों से आपत्ति नहीं है। 'सिन्सियर' का अर्थ 'भूल रहित' नहीं है। 'सिन्सियर' अर्थात् अपने हृदय और उसके हृदय दोनों में एक ही तार हो, उसमें जुदाई नहीं आने दें।

ज़रूरत है पोल रहित सिन्सियरिटी की

अब तू पोल नहीं मारता है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : हाँ... दादा के प्रति बिल्कुल सिन्सियर रहना, तभी मोक्ष होगा। यहाँ पर भी सुखी और वहाँ भी सुखी।

प्रश्नकर्ता : हम सब दादा के प्रति किस तरह से सिन्सियर रह सकते हैं? वह हमें बताइए।

दादाश्री : आज्ञापालन से और दादा जो कहते हैं, उस पर अमल करने से। दादा कहें उसके बाद फिर जो होना हो सो हो। जब तक हो सके तब तक दादा कहते नहीं हैं और यदि कहें तो उसे अमल में लाना है क्योंकि उनके मन में ऐसा कुछ नहीं है कि कहना है या नहीं कहना। इसलिए जो कहें उस पर अमल लाना है। जैसे कि खुद का ही आत्मा है, ऐसे! वही कह रहा है।

सिन्सियरिटी से खत्म होता है स्वच्छंद

'दादा' से क्या जुदाई रखनी? सिन्सियर अर्थात् 'दादा' से जुदाई नहीं रखनी है। एक भी वाक्य या 'एक भी अभिप्राय अलग नहीं रखना है। मैं आप से अलग नहीं हूँ तो आप क्यों मुझसे जुदाई रखते हो? अत: यहाँ पर आपकी समझ ही अलग करती है न! उसी को स्वच्छंद कहते हैं, न! अपनी उस समझ को जलाकर भस्मीभूत कर देनी है। बाकी, इस मेहनत का फल तो मिलेगा। यहाँ पर रोज़ बैठा रहे न, तो उसे अपनी मेहनत का फल मिलेगा। लेकिन अगर 'पोइन्ट ऑफ व्यू' (दृष्टिबिंदु) अलग होगा तो दिक्कत आएगी। भगवान 'पोइन्ट ऑफ व्यू' देखते हैं।

ऐसे कुछ ही लोग हैं जो ज्ञान स्वभाव के सम्मुख हुए हो। जब ज्ञानी ऐसे सामने बैठे हों तब ज्ञानी के सामने सम्मुखता रखनी है। सम्मुखता अर्थात् भले ही आप ऐसे बैठे हों लेकिन भाव सम्मुखता। ऐसी भाव सम्मुखता बहुत कम लोगों में होती है। नाइन्टी डिग्री वाले बहुत कम लोग हैं। कुछ तो एटी डिग्री वाले होते हैं, कोई पचासी डिग्री वाले होते हैं कुछ तो पाँच ही डिग्री वाले होते हैं, वह भी ज्ञान ले लेता है लेकिन भाव सम्मुखता होनी चाहिए।

अन्य गाँठों के मूर्च्छा भाव के कारण भूल जाता है। फिर समझाने पर वापस कहता है कि 'हाँ, समझ गया।

प्रश्नकर्ता : सम्मुखता उतनी ही कम है?

दादाश्री : नहीं! सम्मुखता तो रहती है लेकिन गाँठें बाधा डालती हैं और सम्मुखता होने के बावजूद भी हिला देती हैं।

सम्मुखता अर्थात् सिन्सियरिटी

प्रश्नकर्ता : दादा, सम्मुखता अर्थात् जागृति है?

दादाश्री : हाँ! वही जागृति है। जागृति तो बहुत नहीं रहती लेकिन सम्मुखता अर्थात् खुद की सिन्सियरिटी। हम ज्ञान देते हैं और वह ज्ञान लेता है, वही उसकी सिन्सियरिटी। सब लोग आत्म जागृति तो कहाँ से लाएँगे? वैसे भी सांसारिक जागृति तो मनुष्यों में रहती ही है। कोई भी जीव अजागृत नहीं है लेकिन उसकी सारी जागृति सांसारिक बातों में रहती है। उसकी जागृति उसके व्यापार में और उसके व्यवहार में घुस गई है इसलिए इसमें जागृति नहीं रहती लेकिन सिन्सियरिटी तो होनी चाहिए। हम जो ज्ञान देते हैं, उसमें अगर आप एक भी शब्द नहीं चूको तो उसी में सारी एक्ज़ेक्टनेस है। यहाँ कितने ही लोग तो सो जाते हैं, उन लोगों को मुझे फूल फेंककर जगाना पड़ता है। अरे, भाई! जाग न, भाई! मुश्किल से यह ज्ञान मिलने का अवसर आया है और तब तू सो रहा है। क्योंकि जब यह ज्ञान मिलता है न तब 'मैं शुद्धात्मा हूँ', 'अनंत शक्ति वाला हूँ', 'अनंत सुख का धाम हूँ', ऐसा बोलता है, कुछ देर के बाद जब उसे भीतर थोड़ा आनंद होता है न, तो फिर ज़रा सो जाता है।

व्यवहार में सिन्सियरिटी किस आधार पर?

प्रश्नकर्ता : दादा, इस तरफ सिन्सियरिटी रखने में यदि सांसारिक सिन्सियरिटी कम हो जाए तो चलेगा?

दादाश्री : नहीं! ऐसा कुछ नहीं है। संसार में तो सिन्सियर रहने की ज़रूरत ही नहीं है। संसार, वह खुद आपके प्रति सिन्सियर ही है! आप उसे इन्सिन्सियर बनाते हो। एक उदाहरण देता हूँ। अगर एक व्यक्ति को आज डुबकी लगाकर मर जाना है तो क्या सागर इन्सिन्सियर रहेगा? तू जब भी डुबकी मारना चाहेगा, तब वह तो तैयार ही है। इसी तरह, यह संसार आपके लिए सभी तरह से तैयार है। अत: आपको वहाँ सिन्सियरिटी रखने की ज़रूरत ही नहीं है। वहाँ तो परसत्ता है इसलिए वहाँ पर आपकी जो सिन्सियरिटी रहती है न, वह परसत्ता के कारण रहती है।

समझकर रहो सिन्सियर

निरंतर समाधि रहे, ऐसा यह मार्ग है, उसमें व्याकुल क्यों होते हो? हाँ, उसे पोइन्ट टू पोइन्ट जान लेना चाहिए। वर्ना सर्दी के दिनों में लाइट का बटन दबाने पर तो पंखा चल जाएगा इसलिए पोइन्ट टू पोइन्ट सब समझना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : खुद की समझने की तैयारी होनी चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, और कोई तैयारी नहीं चाहिए। बस! हमने जो कहा है, वही। उसमें इतना ही है कि हमारे प्रति सिन्सियर रहे और कोई तैयारी नहीं करनी है। तैयारी तो मज़दूरों को करनी होती है। नौकरी करनी हो, तब तैयारी की ज़रूरत है। इसमें तैयारी होती होगी? समाधि का मार्ग हाथ में दे दिया, उस के बाद? यह तो, जो पहले की आदतें हैं न, वे खुद का दुश्मन दिखाती हैं। वह पहले दुश्मन को (दोषों को) मित्र बताती हैं। अब, दुश्मन को, दुश्मन तो मानना चाहिए न! अपना अहित करने वाले दुश्मनों से दूर रहना चाहिए। उसके बजाय उनमें तन्मयाकार हो जाते हैं इसलिए फिर ज़रा घोटाला हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उनसे चिपक जाते हैं, दादा।

दादाश्री : नहीं, फिर भी हर्ज नहीं है। इतना ही है कि चिपक जाएँगे तो दु:ख होगा। लेकिन यह मोक्ष के लिए बाधक नहीं है। इतना ही है कि समाधि चली जाएगी। चिपक जाते हो लेकिन आप क्यों चिपकोगे? यदि चिपक जाए तब भी उखाड़ देना है।

प्रश्नकर्ता : बाद में पता चलता है लेकिन यों...

दादाश्री : ज्ञान चिपकता ही नहीं। ज्ञान किसी भी जगह पर नहीं चिपकता। उसी को ज्ञान कहते हैं। अज्ञान कहीं भी चिपक जाता है।

जहाँ पक्का निश्चय वहाँ सिन्सियरिटी

अब आपको अगर मोक्ष में जाना है तो प्रज्ञा के प्रति सिन्सियर रहो और यदि मौज-मज़े उड़ाने हैं तो कुछ देर के लिए उस तरफ चले जाओ। अभी अगर कर्म के उदय ले जाते हैं तो वह अलग बात है। कर्म का उदय घसीटकर ले जाए तो भी हमें इस तरफ का रखना है। नदी उस तरफ खींचेगी लेकिन हमें तो किनारे पर जाने के लिए ज़ोर लगाना है। नहीं लगाना चाहिए? या फिर जैसे वह खींचे वैसे खिंच जाना है?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यदि उसका निश्चय पक्का होगा, तभी सिन्सियर रहेगा न?

दादाश्री : पक्का होगा तभी रह पाएगा न! नहीं तो फिर निश्चय ही नहीं है, उसका क्या फिर? नदी जिस तरफ खींचेगी उसी तरफ चला जाएगा। किनारा तो न जाने कहाँ रह जाएगा! हमें तो किनारे की तरफ जाने के लिए ज़ोर लगाना चाहिए। नदी उस ओर खींचेगी पर हमें इस तरफ आने के लिए हाथ-पैर मारने चाहिए। थोड़ा बहुत, जितना खिसक पाए, उतना ठीक है तब तक में तो किनारे पर आ जाएगा।

सिन्सियरिटी से संहिताएँ खुलती हैं

अपना यह जो साइन्स है वह क्या कहता है कि तू मेरे प्रति जितना सिन्सियर रहेगा उतनी ही तेरी जागृति है।

प्रश्नकर्ता : जितना सिन्सियर उतनी ही जागृति तो है लेकिन यदि विज्ञान का अर्थ ही समझ में न आए, विज्ञान ही नहीं समझ में आता है। वह तो सूत्र में, सूत्र के रूप में ही दे गए हैं आयुर्वेद को। तो अब सूत्रों की स्पष्टता के लिए...।

दादाश्री : हाँ! हम तो वह सब सूत्र के रूप में देते हैं। सब स्पष्ट रूप से, छोटे बच्चे को भी समझ में आ जाए ऐसा देते हैं लेकिन जो उसके प्रति जितना सिन्सियर रहेगा, उतनी ही उसकी जागृति।

यह पूरा साइन्स है। जितनी सिन्सियरिटी उतना ही खुद का है। और सिन्सियरिटी का मतलब है आपकी (सभी आचार) संहिताएँ खुल जाएँ। इसमें वृत्ति होनी चाहिए। सिन्सियरिटी अर्थात् (रिलेटिव में) तन्मयाकार नहीं होना चाहिए और यह संसार वह तन्मयाकार प्रवृत्ति का मार्ग नहीं है, रिलेटिव है। रिलेटिव अर्थात् सुपरफ्लुअस। सुपरफ्लुअस अर्थात आप समझ गए न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी! इसका मतलब है सब ऊपर-ऊपर से ही। सब ऊपर-ऊपर का।

दादाश्री : आप अपनी पत्नी से पत्नी जैसा व्यवहार रखकर बाकी सभी स्त्रियों को 'जय सच्चिदानंद' कर सकते हैं, ऐसा सब कर सकते हैं लेकिन उसमें सुपरफ्लुअस। इस तरह बोल सकते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बोल सकते हैं न!

दादाश्री : बोल सकते हैं। और कितनी ही स्त्रियाँ एक (पुरुष) को पति के रूप से स्थापित करके (अन्य) सभी को नमस्कार करती हैं। सुपरफ्लुअस रहना जिन्हें आता है, वे सब कुछ कर सकते हैं।

यह तो अक्रम विज्ञान है। यह कोई ऐसी वैसी चीज़ नहीं है। जिसे यह प्राप्त हो गया उसका तो कल्याण ही हो गया। प्राप्त होने के बाद यदि सिन्सियर रहा तो जितना सिन्सियर उतना लाभ।

दादा का यह विज्ञान ऐसा है कि यदि उनके कहे अनुसार सिन्सियरली चलेंगे तो समय ही नहीं

लगेगा। यों तुरंत रेडी क्योंकि पूरा विज्ञान चौबीस तीर्थंकरों के आदेश के अनुसार है। चौबीस तीर्थंकरों का आदेश ही है यह। अर्थात् पूरा सार ही आ गया है न इसमें! आपका काम ही हो गया न!

भाव ही सिन्सियरिटी है

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, सिन्सियर बनने के लिए भाव ही करना है न? यदि उसे आपके प्रति वफादार रहना हो और सिन्सियर रहना हो तो उसके लिए क्या करना है?

दादाश्री : सिर्फ भाव ही और क्या करना है आपको? यह आपका अपना जो भाव है न, उसी को सिन्सियरिटी कहते हैं। उसकी अपनी सिन्सियरिटी, ध्येय, दादा की तरफ निरंतर भाव। सिन्सियरिटी मतलब, उसी तरफ झुकाव।

जब आप मेरे प्रति सिन्सियर हो जाओगे तो एक घंटें में मेरे जैसे बन जाओगे।

सिन्सियरिटी से प्राप्त होती है कृपा

दादाजी जो कहते हैं, वह सब मानने की तेरी इच्छा होती है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होती है न!

दादाश्री : अगर अभी तुझे कहें कि 'गाँव चला जा तो.... ?

प्रश्नकर्ता : भाग जाऊँगा।

दादाश्री : हाँ! लेकिन भाग जाएगा मतलब उसकी भाषा ऐसी है। मीठी भाषा।

प्रश्नकर्ता : वह कहता है, 'जैसा आप कहेंगे वैसा।

दादाश्री : नहीं! कहीं ऐसा कहेंगे? हम तो टेस्ट करके देख लेते हैं। अगर वह बैग लेकर चला जाए तब भी हम उसे वापस बुलाने जाएँगे। अगर चला जाएगा तो उसका हित नहीं होगा न? वह जैसे ही आज्ञापालन करने के लिए तैयार हुआ तब फिर हमारी कृपा उतर जाती है, बहुत!

अभी कितने ही लोग मेरे प्रति सिन्सियर हैं। इतना अधिक आज्ञा में रहते हैं सब। रात-दिन आज्ञा में रहना, वह कोई कम सिन्सियरिटी नहीं कही जाएगी न?

तो उतर जाती है भगवान की कृपा

कोई भी व्यक्ति जो सिन्सियर रहे न, तो उस पर मुझे बहुत गर्व है फिर भले ही अन्य लक्षण कैसे भी हों। यदि औरों के साथ कुछ कमी रह जाएगी तो हर्ज नहीं। यदि मेरे साथ ही सिन्सियर रहा तो बहुत हो गया! कितनों के साथ सिन्सियर नहीं भी रह पाते। यदि कोई नालायक है तो उसके साथ कैसे सिन्सियर रह पाएगा। वह तो जेब भी काट ले। लेकिन मैं यह देख लेता हूँ कि मेरे साथ तो सिन्सियर हैं न। तो भगवान की कृपा उतर जाती है। वर्ना कृपा नहीं उतरती। जितनी आपकी 'सिन्सियरिटी', उतनी ही हमारी कृपा। यह कृपा का मापदंड है।

कृपा मतलब 'एवरी टाइम सिन्सियर'। नैमित्तिक कृपा पात्र हुए बगैर 'निश्चय' प्राप्त नहीं हो सकता। क्रमिक मार्ग में भी नैमित्तिक कृपा है ही। 'हम' तो 'स्पेशल' कृपा बरसाते हैं। परम विनय से 'हमारी' कृपा उतर जाती है। सिर्फ 'कम्प्लीट सिन्सियरिटी' ही होनी चाहिए।

परम विनय में समायी, सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी

प्रश्नकर्ता : परम विनय क्या है? समझाइए न दादा!

दादाश्री : जिनमें बहुत सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी होती है। जहाँ सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी दोनों का संपूर्ण मिक्सचर हो और एकता रहे,

जुदाई नहीं लगे, वहाँ शक्ति भी उत्पन्न हो जाती है। रात को भी जुदाई नहीं लगती। दादा और हम एक ही हैं, ऐसा लगता रहता है और वह बढ़ता जाता है। वर्ना अगर, आप मुझे गाड़ी में घुमाओ, कहीं ले जाओ तो उससे कुछ नहीं होगा। मिलेगा, लेकिन परम विनय जितना नहीं मिलेगा। परम विनय की ज़रूरत है। परम विनय को समझना बहुत मुश्किल है, यदि उस पर एस्से (निबंध) लिखना हो न, तो बहुत बड़ा एस्से बनेगा। सिर्फ परम विनय के कारण ही यहाँ पर सब बिना नियम के चलता है। यहाँ पर इतने लोग हैं लेकिन यहाँ कभी भी नियम नहीं रहता। सिर्फ परम विनय ही बताया है, परम विनय में रहना है। फिर नियम की ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

परम विनय से ही हमारी कृपा उतरती है। सिर्फ कम्प्लीट सिन्सियरिटी ही होनी चाहिए। सिन्सियरिटी की ही ज़रूरत है और कुछ नहीं। मैं मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी ही ढूँढता हूँ। मॉरल और सिन्सियर इन दो को ही ढूँढता हूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए फिर वह चाहे जैसे भी कपड़े पहने या कुछ भी खाए, उसमें मुझे कोई हर्ज नहीं है।

हाँ, देखों न! आप हमारे प्रति कितने सिन्सियर रहते हैं। ये निरंतर हमारे प्रति सिन्सियर रहते हैं। हम भगवान के प्रति सिन्सियर रहते हैं और ये हमारे प्रति सिन्सियर रहते हैं। फिर सब, एक ही हुआ न!

जितना सिन्सियर, उतनी रक्षा

यह कलियुग है, दूषमकाल में इंसान कैसे जीए? लोगों को जीने में भी परेशानी है, पैसे हैं तो भी परेशानी है। अगर एक ही इंसान खराब मिल जाए तो पूरी ज़िंदगी चैन से नहीं सोने दे। अभी तो कितने लोगों के बीच जीना है। कौन बचाएगा? कितने लोगों के बीच जीना है?

प्रश्नकर्ता : जागृति से, पाँच आज्ञा से ही जी पाएँगे।

दादाश्री : हाँ! जब ऐसा (कर्म का उदय से टेढ़ा संयोग) कुछ आएगा, उस समय वह अपने आप ही प्रकट हो जाएगी। छोड़ेगी नहीं न! भले ही पूरे दिन आपका चित्त व्यापार में रहे लेकिन एकदम से अचानक, बाहर किसी की तरफ से कोई परेशानी आ जाए तो तुरंत शुद्धात्मा बन जाते हो। क्योंकि बाहर की जलन सहन नहीं होती इसलिए खुद के देश में ही आ जाते हो। उसी तरह, जब इस दुनिया में मरने जैसा दुःख आता है तब वह पूरी तरह से घर में ही घुस जाएगा ऐसा यह विज्ञान है अपना!

आरपार निकलना बहुत मुश्किल है, कठिन समय आ रहा है। एक व्यक्ति मुझे बता रहे थे, एक व्यक्ति को मैंने साठ हज़ार रुपए दिए थे। जब मैंने माँगे, तो तुरंत ही कहने लगा कि 'आपने मुझे दिए ही कहाँ थे?' माँगने पर रसीद माँगने लगा। देखो, कैसा समय आया है! ऐसी तो बहुत झंझट होती है!

प्रश्नकर्ता : दादा! यह तो बहुत सीधी सादी, छोटी सी बात है।

दादाश्री : छोटी सी बात कहा है लेकिन इसमें दूसरी तो इतनी बातें हैं कि बहुत बड़ा इतिहास लिखा जा सकता है। ऐसे समय में बचकर रहना!

प्रश्नकर्ता : दादा के पास आने के बाद, ऐसा (होने के) बावजूद भी आनंद से टिके रह सकते हैं।

दादाश्री : मैं दादा भगवान के पड़ोस में बैठा हूँ, आप मेरे पास बैठे हो और दादा मेरी इतनी रक्षा करते हैं तो फिर आपकी क्यों नहीं करेंगे? सभी की करेंगे। मैं कहता हूँ, 'सभी की रक्षा करना।'

और फिर रक्षा होती है, ये दादा रक्षा करते हैं, निरंतर चौबीस घंटें रक्षा करते हैं। जितना सिन्सियर उतनी रक्षा। उनका कहना ऐसा नहीं है कि आपको सिन्सियर ही रहना चाहिए। यदि आपको बचाव चाहिए तो इतने सिन्सियर रहना।

जितनी सिन्सियरिटी, उतनी ही आलोचना

मेरे प्रति सिन्सियर और मॉरल रहते हैं, इसलिए सभी का मोक्ष होगा। यदि एक के प्रति भी सिन्सियर और मॉरल रहे न, तो भी बहुत हो गया। मेरे पास तो सभी सचमुच में रोते हैं, जैसा हो वैसा कह देते हैं। खुद (अपने बारे में) जितना जानते हैं उससे भी ज़्यादा कह देते हैं। कितना खुलकर बताते हैं यहाँ पर। इसीलिए तो मेरे प्रति सब सिन्सियर रहते हैं। जब वे आलोचना करते हैं न, तब सब कुछ बता देते हैं। अब यदि एक बार क्लियर आलोचना हो जाए तो मनुष्य बहुत से रोगों से मुक्त हो जाता है क्योंकि किसी भी जन्म में यह नहीं किया है। सब कुछ किया है लेकिन ऐसा नहीं किया।

प्रश्नकर्ता : दादा! जब मेरा बेटा आपके पास आया था, उस वक्त उसका स्वभाव बहुत तेज़ था फिर शांत हो गया।

दादाश्री : हाँ! फिर शांत हो गया। फिर तो जैसे-जैसे यहाँ आता है, वैसे-वैसे उसकी समझदारी बढ़ती जा रही है।

क्योंकि वह इंसान दिल का बहुत अच्छा है। मेरे पास सब कुछ कबूल कर लेता है न बेचारा! मेरे पास सभी गुनाह कबूल कर लेता है। फिर जब मैं हाथ फेरता हूँ, तब उसे शांति होती है, कि 'मैं हूँ न, तू घबराना मत।' वह तो थोड़ा बहुत उसके स्वभाव के कारण ऐसा है, बाकी वह अच्छा इंसान है।

ज़रूरत है सिन्सियरिटी की, न कि दिखावे की

प्रश्नकर्ता : बस, दादा आपकी कृपा। आप कृपा रखना हमारे घर पर।

दादाश्री : वह ठीक है लेकिन इन बच्चों ने हमारी सेवा भी बहुत अच्छे से की है। हमें खुश रखा है।

वे सभी बच्चें, बहुत खानदानी हैं। हम खानदानियत देखते हैं। खानदानियत अर्थात् क्या? सिन्सियर होने चाहिए। ऊपर से दिखावा करो और भीतर गड़बड़ हो। दिखावे की हमें ज़रूरत नहीं है। हमें ऊपरी दिखावे की ज़रूरत नहीं है। हमें तो सिन्सियरिटी की ज़रूरत है। हर एक बच्चा बहुत सिन्सियर है हर तरह से।

एक *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) और दूसरा सिन्सियरिटी, सिर्फ ये दो ही हों तो सब कुछ प्राप्त हो सकता है। बाकी इसमें कोई मेहनत करनी ही नहीं होती।

ज्ञानी के चरणों में प्राप्त कृपा का फल

प्रश्नकर्ता : आपकी परम कृपा प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : यही! और क्या करना है? यही करना चाहिए। संसार को विस्मृत करके ज्ञानी के चरणो में ही बैठे रहना चाहिए। अभी वह विस्मृत ही है न! आप सब ने समझ लिया है, उन्हीं के चरणों में बैठे हो न! वही करना है। ज्ञानीपुरुष को और कुछ नहीं चाहिए। और अगर किसी को चाहिए तो वह ज्ञानी नहीं है। बल्कि आप तो दु:खी थे, हम आपका दु:ख दूर करने के लिए आए हैं। हम दु:ख देने नहीं आए। अत: जितना हो सके उतना ज्ञानी के चरणों में ही पड़े रहना। देखो, अभी पूरा दिन पड़े रहते हो न, कितने मुक्त हो! भीतर आनंद होता है न! अगर कोई कहे कि

आज आप वहाँ सत्संग में जाओगे तो दो सौ-दो सौ डॉलर का हर्जाना पड़ेगा। फिर भी आप क्या कहोगे, 'भाई, भले ही हर्जाना दे देंगे लेकिन पहले यह सत्संग क्योंकि ऐसा मेल कहाँ बैठेगा?

जितनी सिन्सियरिटी, उतनी ज़्यादा कृपा

प्रश्नकर्ता : दादा, आप अभी यहाँ हाज़िर हैं लेकिन जब आप यहाँ से इन्डिया चले जाते हैं उसके बाद यहाँ आपकी हाज़िरी नहीं रहती तब हमें आपके चरणों में रहने के लिए, आपकी परम कृपा को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : सूक्ष्म भाव से तार जोड़ना है ।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से करना है दादा?

दादाश्री : वह तो आप करते ही हो न! जो करते हो वह ठीक है। जितनी ज़्यादा सिन्सियरिटी से करोगे, उतना ऑल राइट। क्योंकि जो हाज़िर है, जो आप से मिले हैं, उनके प्रति किए हुए सूक्ष्म भाव काम करते हैं लेकिन यदि मिले ही न हों, उन्हें जो (ज्ञानी से) मिले हैं, उन्हें *राजीपा* प्राप्त हुआ होता है। ज्ञानी के आशीर्वाद मिले होते हैं। उन्होंने (ज्ञानी का) हास्य देखा हुआ होता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि आज्ञा में ज़्यादा रहेंगे तो वह ज़्यादा फल देगा क्या?

दादाश्री : वह तो बहुत उत्तम बात है। अगर आज्ञा में रहे तो अन्य कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है लेकिन आज्ञा में रह नहीं पाते न! इसलिए अन्य सभी साधनों की ज़रूरत है। एक भी आज्ञा में पूरी तरह से नहीं रहा जाता न! वर्ना इस ज्ञान में दुनिया की तो किसी भी चीज़ की ज़रूरत ही नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : दादा, जब आप इन्डिया में होते हैं तब हम यहाँ निदिध्यासन करते हैं या सभी मिलकर सत्संग करते हैं या आप्तवाणी पढ़ते हैं तो क्या वह सब सूक्ष्म भाव कहलाएगा?

दादाश्री : लेकिन उसमें सिन्सियरिटी होनी चाहिए। सिन्सियरिटी से सब कुछ बढ़ता जाता है।

वैज्ञानिक खुलासा सिन्सियरिटी का

प्रश्नकर्ता : दादा हमें ऐसा रहना चाहिए कि 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने हैं लेकिन हमें अंदर ऐसा रहता है कि नहीं करना है तो वहाँ पर अपनी सिन्सियरिटी कैसे डेवलप (विकसित) करें?

दादाश्री : सिन्सियरिटी का मतलब यह है कि एक व्यक्ति सब्ज़ी काटते हुए 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलता रहता है तो उसे सिन्सियरिटी नहीं कहेंगे। सिन्सियरिटी तो वह जो भी बोल रहा है, उसे पढ़ता रहे और पढ़ने वाला वास्तव में पढ़ रहा है या नहीं, खुद उसे 'देखने वाला' रहे।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें मन में पढ़ना चाहिए, और फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ठीक से पढ़ रहा है या नहीं, उसे जानना चाहिए। अर्थात् बोलने वाला है, पढ़ने वाला है और जानने वाला है। जितना जानने वाले में रहा, वह सिन्सियरिटी है। पढ़ने वाला वह सेकन्ड और यह थर्ड। तीनों क्लास वाले स्टेशन तक पहुँचेंगे लेकिन अंदर का सुख अलग-अलग रहेगा। वह अपर (उच्च क्लास) का सुख होता है।

प्रश्नकर्ता : जो सूक्ष्म रूप से देखने वाला है, वह देखता है कि यह ठीक से नहीं पढ़ रहा है, तब क्या करें?

दादाश्री : नहीं! कुछ नहीं करना है। वह ठीक से नहीं पढ़ रहा है, आप उसे जानते हो तो आप फर्स्ट क्लास में हो। उसे आप जानते हो कि

वह ठीक से पढ़ रहा है या नहीं। उसके बाद, आप पढ़ते हो और वह बोलता है, वह सेकन्ड क्लास में है और पढ़ते नहीं और सिर्फ बोलते हो तो, वह थर्ड क्लास में। तीनों एक ही स्टेशन पर पहुँचेंगे लेकिन तीनों का सुख अलग-अलग होगा।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, वे अलग-अलग सुख कौन से हैं? किस तरह से अलग-अलग सुख भोगे जाते हैं?

दादाश्री : उस (फर्स्ट क्लास) वाले को तो संपूर्ण रूप से समाधि सुख बरतता है। देखने वाले रहे न, तो आप संपूर्ण आत्मा बन गए और यदि पढ़ने वाले रहे तो वह सिन्सियरिटी है और यदि पढ़े भी नहीं तो वह सिन्सियरिटी नहीं है।

अभ्यास से बढ़ती है शुद्धता

प्रश्नकर्ता : आपने अभी बात की न, कि 'बोले, फिर पढ़े और पढ़ने वाले को देखे।' लेकिन यदि पढ़ नहीं पाए और सिर्फ जो बोला जा रहा है उसे सुने और सुनने वाले को देखें तो क्या वह भी सिन्सियर कहलाएगा?'

दादाश्री : यह देखने वाला ज़्यादा अच्छा है। बाकी की सभी डिज़ाइन है तो ठीक लेकिन इसके जैसा लाभ नहीं मिलेगा। पढ़े तो बहुत अच्छा है। पढ़ने के बाद और फिर उसे पढ़ने की सिद्धि मिल जाती है इसलिए फिर उसे जानने की क्रिया करनी चाहिए कि कितना पढ़ा जा रहा है, किस तरह से है और कौन सा? उससे आगे फिर कोई सिद्धि नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : तो दादा! जब सुनते हैं न तब पढ़ने के बजाय सुनने में ज़्यादा एकाग्रता रहती है, तो क्या फिर सुनने में से पढ़ने पर आना चाहिए?

दादाश्री : पढ़ना तो बहुत हेल्प फुल है उसका तो प्रयत्न ही नहीं किया।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप पढ़ने का कह रहे हैं, वह मन में पढ़ने की बात कर रहे हैं न? बंद आँखों से ऐसे देखकर, मन में शब्द दिखाई दें, उसी तरह से करने के लिए आप कह रहे हैं न?

दादाश्री : जो भी यहाँ पढ़ते हैं, वह दिखाई देना चाहिए। 'नमो भगवते वासुदेवाय...' इस तरह बड़े अक्षरों में दिखाई देना चाहिए, सुंदरों अक्षरों में।

प्रश्नकर्ता : उसमें फिर कुछ समय लगता है। दस मिनट में दस बार 'दादा भगवान ना असीम जय जयकार' बोल सकते हैं।

दादाश्री : समय लगे तो उसमें हर्ज नहीं है। ज़ल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं है लेकिन प्योरिटी (शुद्धता) चाहिए। जितना देखेंगे उतनी प्योरिटी।

प्रश्नकर्ता : क्या इन अक्षरों को देखने में प्योरिटी की ज़रूरत है?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो जब प्योर हो चुके होंगे तभी आएगी न! एकदम प्योर हो चुके होंगे, तभी अंदर से पढ़ा जाएगा न।

दादाश्री : नहीं! कितना पढ़ा जा रहा है उसे देखने का अभ्यास करोगे तो भीतर शुद्ध होता जाएगा। यदि नहीं हुआ होगा तो इस तरह करने से शुद्ध होता जाएगा।

लाखों जन्मों में जो प्राप्त करना था, उसे हमें एक ही जन्म में पूरा कर लेना है। अनंत जन्मों के नुकसान की भरपाई एक जन्म में पूरी करनी है इसलिए हमें ज़्यादा से ज़्यादा दादा के कहे अनुसार चलना चाहिए। मार्ग सरल है, सुगम है और सहज है।

आज्ञापालन से होता जाता है सब शुद्ध

प्रश्नकर्ता : जब हम जन्म लेते हैं तभी से मन-वचन-काया की बेटरियाँ लेकर ही आते हैं और वे डिस्चार्ज होती रहती हैं। वे जो बैटरियाँ भरी हुई हैं, उसी अनुसार वाणी निकलती है तो वाणी को शुद्ध करनी हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ठीक है।

प्रश्नकर्ता : तो दादा! उसका उपाय आपने यह बताया है कि यदि ज्ञानी की आज्ञा से आप मौन रखोगे तो वाणी सुधरेगी। तो वह किस तरह से होगा, ठीक से समझ में नहीं आया।

दादाश्री : वह तो ज्ञानी की आज्ञा से ही होगा। ज्ञानी अर्थात् उनमें कोई कर्ता भाव नहीं है इसलिए ज्ञानी की आज्ञा ही एक ऐसी चीज़ है कि उनकी आज्ञा से सब कुछ बदल जाता है!

प्रश्नकर्ता : जो चार्ज हो चुका है वह भी बदल जाता है?

दादाश्री : सब बदल जाता है। मेरा खुद का नहीं बदलेगा लेकिन मेरी आज्ञा से सब कुछ बदल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह तो बहुत बड़ी बात है दादा कि जो चार्ज हो चुका है, वह बदल जाएगा।

दादाश्री : हाँ! जो चार्ज हो चुका है उसे भी बदल दे, उसी को कहते हैं ज्ञानी की आज्ञा।

प्रश्नकर्ता : हं... जो चार्ज हो चुका है अगर वह भी बदल जाए तो वह बहुत बड़ी बात हो गई।

दादाश्री : बहुत बड़ी बात है।

प्रश्नकर्ता : दादा, अगर चार्ज भी बदल जाता है और वाणी भी बदल जाती है, तो क्या फिर उसी प्रकार से वर्तन (व्यवहार) भी बदल सकता है।

दादाश्री : सब कुछ बदल जाता है, आज्ञा से क्या नहीं हो सकता? लेकिन उस प्रकार का वर्तन आने में समय लगता है। यदि बेढंगा वर्तन हो तो समय लगता है। बाकी, सभी कुछ बदल सकता है। आज्ञा तो बहुत बड़ी चीज़ है क्योंकि यह आज्ञा, मालिकी रहित चीज़ है।

अहंकारी का भी बदल जाता है उसके तपोबल से

जिस तरह अहंकारी इंसान की वाणी की टेप कुछ-कुछ बदलती है। उसी प्रकार से अज्ञानी की अज्ञानता में भरी गई टेप भी बदल जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : अज्ञानता में भरी गई टेप भी बदल जाएँगी?

दादाश्री : और क्या। इस प्रकार वह अज्ञानता से करता है इसलिए टेप तो बदलेगी न?

प्रश्नकर्ता : हाँ! अर्थात् जैसे-जैसे अहंकार बढ़ता है वैसे-वैसे टेप बदलती है?

दादाश्री : टेप बदलती हैं लेकिन कुछ हद तक, पूरी तरह से नहीं।

प्रश्नकर्ता : पूरी तरह से नहीं बदलतीं?

दादाश्री : कुछ प्रकार की टेप इच्छा के अनुसार ले जाता है।

प्रश्नकर्ता : अंहकार से ले जाता है?

दादाश्री : हाँ, ले जाता है।

प्रश्नकर्ता : अहंकार में इतनी ताकत है क्या?

दादाश्री : अहंकार से ही तो यह सब है न, उलझकर! जिसकी जो-जो मूल टेप हैं न, वह

उन्हें सीधी नहीं रहने देता और उन्हें उलझाकर फिर नयी बनाता है। भीतर उलझनें पैदा कर देता है।

प्रश्नकर्ता : वह उसके आज के व्यवहार से होता है या उसके भाव से या अहंकार से होता है?

दादाश्री : अहंकार से होता है।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार अहंकार से वाणी की टेप बदलती है उसी प्रकार अहंकार से व्यवहार की टेप भी बदलती है क्या?

दादाश्री : हाँ! ऐसा सब होता है न! उसी वजह से यह संसार कायम है न! ज्ञान लेने के बाद नहीं बदलता। हमारा जितना डिस्चार्ज होना हो, उतना ही होता है जबकि अहंकारियों का तो बदल जाता है लेकिन पूरी तरह से नहीं बदलता। कुछ हद तक ही बदलता है। जितना उसका तपोबल होता है, उतना बदल जाता है।

प्रश्नकर्ता : तपोबल क्या होता है दादा?

दादाश्री : तपोबल अर्थात् उसकी सिन्सियरिटी। खुद अपने आपके प्रति सिन्सियरिटी रहती है। हाँ! जो खुद इन्सिन्सियर हो, उसका कुछ नहीं बदल सकता।

प्रश्नकर्ता : अगर ऐसा अहंकार आए कि बस! मुझे यह करना ही है तो फिर बदल सकता है?

दादाश्री : अगर सिन्सियरली करे तो निकाल देगा, सब बदल देगा जबकि अहंकार से बदले हुए के बीज रह जाते हैं फिर से उग निकलते हैं, तब फिर परेशानी हो जाएगी। उसका बीज रह जाता है जबकि निर्अहंकारी रूप से करने पर बीज खत्म हो जाता है।

बचाव करने से टूटती है सिन्सियरिटी

ऐसा है न, वाणी बोलने में हर्ज नहीं है। वह तो उसका कोर्ड वर्ड है, उसके फूटने से बोली निकलती है लेकिन उसके पीछे अपना बचाव नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, बचाव नहीं होना चाहिए उसका अर्थ ऐसा हुआ कि हम सही है, इस प्रकार की भावना नहीं होनी चाहिए।

दादाश्री : वह बचाव है। उसी को बचाव कहा जाता है। हम सही हैं, उसे बचाव ही कहा जाता है। यदि बचाव न रहे तो कुछ भी नहीं है। सभी गोले फूट जाते हैं और किसी को ज़्यादा कुछ चोट भी लगती नहीं है। बचाव करने की वजह से बहुत लग जाती है। बचाव रहित वाणी से लोगों को चोट लगने का डर नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जब हम वाणी बोलते हैं तब, 'हम सही हैं' वह इतना अधिक कन्फर्म (पक्का) रहता है कि हमें उससे अलग रहने का और 'वह संपूर्ण रूप से करेक्ट नहीं है,' इस चीज़ का ध्यान रखना पड़ेगा...

दादाश्री : ऐसा मानकर आगे चलने देना कि बिलकुल भी करेक्ट नहीं है। मैं तो बहुत बार लोगों से कहता हूँ कि 'भाई, मुझे तो कुछ भी नहीं आता।' इस तरह से फिर आगे चलने देता हूँ। 'नहीं आता', कहने से सब कैसे हो जाते हैं? कोई विरोध करेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं करेगा लेकिन अभी भी कुछ उलझन है कि यों भी कुछ आता तो है नहीं लेकिन फिर दो पोज़िशन (स्थिति) आती है एक, घर के मुख्य व्यक्ति हों या कारखाने का मुख्य व्यक्ति हों और अगर हम ऐसे ढीला रहकर बोलेंगे तो हमें ऐसा डर लगा रहता है कि बच्चा चढ़ बैठेगा अथवा वर्कस् (मज़दूर) चढ़ बैठेंगे। इसलिए ढुलमुल नहीं बोल सकते और अगर ढुलमुल नहीं बोलते हैं तो उसके साथ फिर वह अहंकारी वाक्य आ ही जाता है।

दादाश्री : हाँ, वाक्य आ जाएगा फिर वह अहंकार है। अहंकार की कोई ज़रूरत ही नहीं है। अहंकार तो सभी बातों में नुकसान ही पहुँचाता है। अगर इस तरह से डरा-धमकाकर हम काम करवाने जाते हैं न, तो वे सभी ऐसा ही समझते हैं कि 'ये हैं तब तक हमें सब काम अच्छी तरह से करने हैं। और इनके जाने के बाद वापस उल्टा।' लेकिन जो सिन्सियर है, जहाँ अहंकार नहीं है, वे हमेशा सिन्सियर रहते हैं। जिसमें मॉरेलिटी है वह सिन्सियर होता ही है।

पॉज़िटिव उपाय करो, नेगेटिव नहीं

अपना अहंकार नहीं होना चाहिए। अहंकार सभी को चुभता है। किसी छोटे बच्चे को भी ज़रा, 'हट जा, मूर्ख, गधा' ऐसा-वैसा कुछ कहें तो क्या असर होगा? और अगर ऐसा कहें कि 'बेटा, तू तो बहुत समझदार है' तो वह तुरंत आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बड़ी पॉज़िशन वाले लोगों में मान्यता की एक प्रकार की ऐसी ग्रंथि है कि, 'इसे बहुत समझदार कहने से यह बिगड़ जाएगा।'

दादाश्री : हाँ, सही बात कर रहे हो और यदि 'मूर्ख' कहेंगे तो भी बिगड़ जाएगा! 'बहुत समझदार' कहोगे तो भी बिगड़ जाएगा। क्योंकि उसके अहंकार को एन्करेजमेन्ट (प्रोत्साहन) मिल जाएगा और यदि 'मूर्ख' कहेंगे तो बल्कि साइकोलॉजिकल (मानसिक असर) इफेक्ट हो जाएगा। समझदार इंसान को पच्चीस-पचास बार 'पागल' कहने पर उसके मन में ऐसा भ्रम हो जाएगा कि 'साला, मैं पागल तो नहीं हो गया?' ऐसा सोचते-सोचते वह पागल हो जाएगा।

इसलिए मैं पागलों से भी कहता हूँ कि, 'तेरे जैसा समझदार कोई नहीं है।' इस तरह से कहकर आगे चलो। संसार में पॉज़िटिव की तरफ चलो, नेगेटिव की तरफ मत चलना। पॉज़िटिव का उपाय होगा और यदि मैं किसी को 'समझदार' कहता हूँ न, मुझ में उतना एन्करेज करने की शक्ति है तो फिर कभी उसे उतारने के लिए थप्पड़ भी लगा देता हूँ। आपको उस प्रकार से थप्पड़ लगाना नहीं आएगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ! लेकिन अगर हम वह नहीं सीखेंगे तो हमारा कैसे चलेगा?

दादाश्री : नहीं! ऐसा नहीं है। आपको मेरा व्यवहार भी देख लेना चाहिए। जब उसका अहंकार बहुत अधिक चढ़ जाए तब अगर मैं उसे नहीं लगाऊँगा तो वह उल्टे रास्ते पर चला जाएगा और अगर उसे एन्करेजमेन्ट नहीं देंगे तो वह आगे नहीं बढ़ेगा।

अहंकार का बचाव करने की ज़रूरत नहीं है

प्रश्नकर्ता : आपका तो ऐसा है कि आप निर्‌हंकारी हैं इसलिए आपको तो सिर्फ सामने वाले के अहंकार को हैन्डल (संभालना) करना है। जबकि हमें तो एक साथ दोनों को हैन्डल करना पड़ता है। एक तो हमारा खुद का अहंकार जो कि (सामने वाले को) पॉज़िटिव-नेगेटिव करता रहता है और दूसरा सामने वाले के अहंकार को पॉज़िटिव और नेगेटिव चलाना है इसलिए हमारे हिस्से में डबल प्रॉब्लम हैं।

दादाश्री : जब ऐसा जान लोगे न कि अहंकार नुकसानदेह है, तभी से सब काम सरल हो जाएगा। वह बचाव करने जैसी चीज़ नहीं है। वह अहंकार ऐसा है कि खुद ही बचाव कर लेगा। हमें अहंकार का बचाव करने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : घर और ऑफिस, कारखाने वगैरह में डिस्कशन तो चलता ही है न! अब, डिस्कशन में प्रत्येक व्यक्ति का खुद का व्यू पोइन्ट रहता है और बहुत स्ट्रोंग व्यू पोइन्ट रहता है।

दादाश्री : लेकिन डिस्कशन किसका होता है, संसार का ही न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमारे अंदर तो सब कुछ संसार का ही भरा है न! उसमें से हमें निकलना है। हमारे व्यवहार की वही प्रॉब्लम है न।

दादाश्री : वे सभी प्रॉब्लम तो ऐसे हैं न कि यदि आप लेवल में नहीं रहोगे तो आपके सभी प्रॉब्लम रहेंगे। बाकी, ये अपनी पाँच आज्ञाएँ ऐसी हैं कि प्रत्येक प्रॉब्लम में एडजस्ट हो जाएँ। उसके बावजूद भी अब, अगर आपको यह रास्ता अनुकूल नहीं आए तो दूसरा रास्ते तो आपको जानने ही चाहिए।

जागृत रहो व्यवहार में

व्यवहार का मतलब क्या है? देकर लो या फिर लेकर दो तो उसे व्यवहार कहेंगे।

व्यवहार अर्थात् देकर लो। हमारा व्यवहार ऐसा नहीं है। मैं देता भी नहीं हूँ और लेता भी नहीं हूँ। अत: मुझे कोई देता भी नहीं। मैं सभी जगह अपने व्यवहार के अनुसार रहता हूँ अब, व्यवहार को इस तरह से बदल दो कि देकर लेना है। अगर आपको पुसाता हो तो दो। जब वह वापस देने आए तब अगर पुसाए तो दो।

हम बावड़ी में जाकर कहें कि 'तू बदमाश है।' तब वह हमें क्या कहेगी कि 'तू बदमाश है।' और अगर हमें वह अच्छा नहीं लगता तो कहेंगे, 'तू राजा है' तब वह कहेगी, 'तू राजा है'। तो हमें अच्छा लगेगा। हम कहेंगे 'तू चौदहलोक का नाथ है।' तो वह हमें कहेगी 'तू चौदहलोक का नाथ है' बस, जैसा हमें पसंद है वैसा बोलो, प्रोजेक्ट करो। ऐसा प्रोजेक्ट करो कि जो आपको पसंद आए। यह सब आपका ही प्रोजेक्शन (चित्रण) है।

जहाँ बचाव करते हैं वहाँ नहीं है सिन्सियरिटी

तुझ में सिन्सियरिटी का गुण है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। ऊपर से ऐसा दिखाई देता है कि हम बहुत सिन्सियर हैं।

दादाश्री : वह दिखाई देता है लेकिन अभी भी बचाव करते हो।

प्रश्नकर्ता : इसे बचाव करना कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, बचाव करते हो, बचाव करता है बस उतना ही जानते हो उसे छुपाकर बोलते हो।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् किस बारे में सिन्सियरिटी का गुण नहीं है?

दादाश्री : किसी भी बारे में सिन्सियर हैं ही नहीं। यह तो जहाँ देखो वहाँ छुपाता रहता है। तेरा ऐसा नहीं मानने का कारण भी यही है कि बचाव करता है न!

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा नहीं है। मैं तो ऐसा समझता हूँ कि किसी बात में सिन्सियर हो सकता है जबकि कहीं और न भी हो।

दादाश्री : नहीं! कहीं ओर नहीं है, वह आपकी प्रकृति की वजह से है। उसे आपकी सिन्सियरिटी नहीं कहा जाएगी। यदि किसी भी जगह पर सिन्सियर नहीं हो तो आप सिन्सियर हो ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि अगर सिन्सियर है तो सभी में सिन्सियर होगा?

दादाश्री : सिन्सियर रहता है मतलब यदि एक में आप सिन्सियर रहते हो लेकिन आप सभी जगह सिन्सियर नहीं रहते। अत: सच यही है कि आप सिन्सियर नहीं रहते। कहा कि 'सिन्सियर रहते हो,' वह गलत है। जहाँ पर सिन्सियर नहीं रहते वहाँ भी आप ऐसा ही कहते हो न कि 'मैं सिन्सियर हूँ!' सिन्सियर हो, ऐसा आपको लगता है न? किसमें? किसी बात में सिन्सियर हो?

प्रश्नकर्ता : हर एक में सिन्सियर नहीं रह सकते, जो पसंद की चीज़ हो उसमें...

दादाश्री : तो फिर वही हुआ न कि सिन्सियर नहीं हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह है।

दादाश्री : अतः आप सिन्सियर हो ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : अच्छा-अच्छा।

दादाश्री : इसे तो ऐसा लगता था कि 'मैं सिन्सियर ही हूँ।' कल बात की तभी से समझ गया कि 'मैं बिल्कुल भी सिन्सियर नहीं हूँ।' इन्सिन्सियर होने के बावजूद जो खुद का बचाव करे न, उसमें सिन्सियरिटी नहीं है और दोष होने पर जिसका मन पीछे हट जाए वह सिन्सियर है। खुद के दोष दिखाई देने से पहले ही उसका मन पीछे हट जाता है, वह ढीला पड़ जाता है। जबकि यह तो ढीला नहीं पड़ता न! कुछ समझ में आ रहा है?

जो दोष को स्वीकार करे वह सिन्सियर

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया। यदि दोष होने पर कोई दोष बताए तो जो उस दोष को स्वीकार करके ढीला पड़ जाए, वह सिन्सियर है। अर्थात् हर समय, जब कभी भी, कहीं भी दोष हो तब अगर आप उसे स्वीकार कर लो तो आप पूर्ण रूप से सिन्सियर हो, ऐसा कहा जाएगा? अगर एक बार भी दोष का बचाव किया तो सिन्सियर नहीं हो।

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : अतः खुद को ही ऐसा कह देना है कि यह दोष मुझ में है, खुद का ही बता देना है।

दादाश्री : बचाव करता है इसलिए खुद इन्सिन्सियर है यदि ऐसा मानेगा तो आगे बढ़ेगा। मंगली का बचाव किया था?

प्रश्नकर्ता : हाँ, किया था न!

दादाश्री : उस समय आप शुद्धात्मा नहीं रहे। यदि आप मंगली का बचाव कर रही हो तो आप शुद्धात्मा नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् मंगली का बिल्कुल भी बचाव नहीं करना है?

दादाश्री : नहीं! वर्ना आप शुद्धात्मा नहीं हो। मेरे कहने पर आप कहती हो 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह आप कपट करती हो न? कपट नहीं करतीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ।

दादाश्री : मुझे कहती हो 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और आप मंगली नहीं हो, उसके बावजूद उसी में (मंगली में) रहना चाहते हो?

प्रश्नकर्ता : अब, अगर मंगली में नहीं रहना चाहूँ तो किस प्रकार से कहना है।

दादाश्री : आप उसी में रहना चाहती हो। वर्ना तुरंत ही उसका विरोध करती। उससे ऐसा कह सकते हो, 'मंगली अभी भी आप ऐसा करती हो?'

प्रश्नकर्ता : हाँ! मतलब मंगली से ऐसा कहना है कि आप ऐसा सब कर रही हो तो फिर आप शुद्धात्मा कैसे हुई?

दादाश्री : नहीं! कहना, 'मैं शुद्धात्मा बन चुका हूँ लेकिन आप शुद्धात्मा नहीं बने इसलिए आप ऐसा नहीं बोल सकती'। आप तो कपट करती हो। दादा ने कहा है, मैं शुद्धात्मा बन चुका हूँ लेकिन आप (कपट) करके बल्कि मुझे धूल वाला बना रही हो।

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ! मतलब मंगली से ऐसा कहना है?

दादाश्री : हाँ! कहना कि 'भाई, मुझसे ऐसी भूल हो रही थी, अब आपकी और मेरी नहीं बनेगी। अनुकूल नहीं आएगा,' आप सुधरो या बिगड़ो हमें कुछ भी नहीं कहना है। आपका बचाव नहीं करना है। हम तो मुँह पर कह देंगे कि 'आप ऐसा गलत करती हो।' बचाव क्यों करती हो? कुछ समझ में आया या नहीं?

समझें हकीकत ज्ञानी की दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया दादा, 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा करके घोड़ा चला दौड़ में...

दादाश्री : तू समझ गई। तू तो रात को बोलते ही समझ गई थी और पूरी रात वही रहा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : आपको थोड़ा बहुत समझ में आया या फिर यों ही?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया दादा, कुछ-कुछ समझ में आया है।

दादाश्री : कुछ ही समझ में आने का क्या कारण है? अभी भी ढंकती रहती है, इसलिए कुछ ही समझ में आता है, कुछ ही समझ में आएगा न? थोड़ा बहुत समझ में आया न! क्या करती है?

प्रश्नकर्ता : ढंकती रहती है।

दादाश्री : यदि कोई ऐसा कहे कि 'सब समझ में आ गया' तो उसका ढंकना बंद हो जाना चाहिए। इसलिए फिर, उस मंगली को भी समझ में आ जाएगा कि अब तो ये ढंकते नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् इतना समझ में आ गया कि मंगली का बिल्कुल भी बचाव करना नहीं है।

दादाश्री : मंगली के साथ पड़ोसी जैसा संबंध रखना है। उसका बचाव नहीं करना है। यदि ऐसा हो कि सभी के सामने खुलकर बता नहीं सको तो मंगली को अंदर रूम में बैठाकर कहती रहना। और यदि उससे ज़्यादा बताया जा सके तो पति से कहना चाहिए कि 'मंगली तो ऐसी ही है।' ऐसा कहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा! क्या मंगली को ऐसी धमकी भी दी जा सकती है कि, 'यदि तू बहुत गड़बड़ करेगी तो सब को बता दूँगी'?

दादाश्री : नहीं! ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं है। मंगली समझ ही जाएगी क्योंकि अगर बाहर सभी को बता देगी तो मेरा क्या रहेगा? वह खुद ही घबरा जाएगी।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन जब बहुत उछलकूद करे, तब एकाध बार सब को बता सकती हूँ...

दादाश्री : नहीं, जब तक उछलकूद करे उतनी समय तक उसे कहते रहना है। सब को बताने की ज़रूरत ही नहीं है। वह तो समझ ही जाएगी कि अब तो ये बता देगी।

यह कैसा है? उदाहरण देता हूँ। जैसे कि यदि डॉक्टर ने मना किया हो, कि 'चाय नहीं पीना' उसके बावजूद भीतर से ऐसा कहे कि 'नहीं! पी लो न, वे डॉक्टर तो कहते रहेंगे।' फिर मैंने पी ली। अब फिर पीने के बाद उसे बताता नहीं हूँ, ढंकता रहता हूँ तो आगे भी पी लूँगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, पीयोगे।

दादाश्री : लेकिन अगर मैं कह देता हूँ, 'डॉक्टर आपने मना किया फिर भी मैंने पी ली।' यानि डॉक्टर फिर से कहें कि 'आप नहीं पीना'। लेकिन इस तरह से खुला कर दें तो अपना मन भीतर में क्या समझेगा कि ये तो कह देंगे। यह तो नालायक इंसान है, कहेगा। इसलिए अपना मन

उससे अलग होता जाएगा फिर फ्रेन्डशिप कम होती जाएगी। आपको मेरा उदाहरण समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ! समझ में आया?

दादाश्री : मन की जगह पर, मंगली।

प्रश्नकर्ता : हाँ, मन की जगह पर मंगली है। समझ में आ गया।

दादाश्री : अब यदि आपको डॉक्टर से मन की बात नहीं कहनी हो, इतनी हिम्मत नहीं हो रही हो तो मन से कहना कि 'तू फिर से इस तरह से पीएगी तो मैं डॉक्टर को बता दूँगी।' और 'अगर पीएगी तो तेरी इज़्ज़त नहीं रहेगी,' ऐसा कहना तब फिर वह समझ जाएगी कि अब ये अलग हो गए। अब इन्हें ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं है।

आज्ञा का पालन करे तभी सिन्सियर

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' 'मैं शुद्धात्मा हूँ' इस प्रकार से विधियाँ करवाई जबकि रहे मंगली में। ऐसे कितने सारे दोष किए, कितना नुकसान किया?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : हमेशा विधि करवाई, (हमेशा) ही विधि करवाई कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

दादाश्री : जबकि उस शुद्धात्मा की तरफ नहीं चले और दूसरी तरफ (मंगली) का बचाव किया।

प्रश्नकर्ता : दादा, इसका मतलब यह है कि यदि मैं ऐसा कहूँ कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो मुझे शुद्धात्मा का ही बचाव करना है।

दादाश्री : हाँ, अब ठीक है।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि यदि मैं शुद्धात्मा हूँ और बचाव मंगली का करती हूँ तो फिर तो मैं कहीं की भी नहीं रही, वह कपट हुआ न।

दादाश्री : यही सब कुछ कहना है कि जब देखो तब ऐसा बोलती हो फिर मेरे साथ विश्वासघात क्यों करती हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, और यदि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो पाँच आज्ञा का पालन करने से ही उसका बचाव होगा न। 'शुद्धात्मा' का।

दादाश्री : तभी होगा न। तब वह सिन्सियर कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : अब ठीक से समझ में आ गया कि 'मैं जो बोलती हूँ', उसी का मुझे बचाव करना है। यदि दादा ने मुझे शुद्धात्मा बना दिया है तो मुझे शुद्धात्मा का ही बचाव करना है। अब यदि मैं मंगली का बचाव करती हूँ तो मैं खुद से भी विश्वासघात करती हूँ और दादा से भी विश्वासघात करती हूँ।

दादाश्री : हाँ.. मेरे साथ तो, 'तू पाँच आज्ञा का पालन करती है', वही सिन्सियरिटी। इतना ही कहना चाहते हैं।

जो खुद के ही पक्ष के प्रति सिन्सियर नहीं है, वह दूसरे के पक्ष का क्या भला करेगा?

ज्ञानीपुरुष के पास, उनकी आज्ञा की आराधना करना ही एक मात्र उपाय है, अन्य कोई उपाय नहीं है। जिसका मंडन किया है, उसका खंडन नहीं करना, उसी को आराधक वृत्ति कहते हैं। जिसका मंडन किया उसका खंडन नहीं करना, उसी सिन्सियरिटी से मोक्ष होता है।

निश्चय तो सिन्सियरली आज्ञापालन का

यों तो यहाँ पर 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते हो और जब झंझट होती है तब तू चंदू का बचाव करता है। तो वास्तव में तू क्या है?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : और बचाव किसका करते हो?

प्रश्नकर्ता : चंदू का। चंदू का पक्ष लिया।

दादाश्री : समझ में आया, बचाव करते हो या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : कोई तुझे सात बार गाड़ी में बैठाए और उतारे, उस समय तेरा मुँह बासी कढ़ी जैसा हो जाता है! सावधान तो रहना पड़ेगा न? फिर हम क्या करते है? सावधान करते हैं। भाई जागो, जागो। बिवेर! बिवेर!

प्रश्नकर्ता : ज़रूर दादा, यह सब कुछ समझने की बहुत ही ज़रूरत है।

दादाश्री : दादा की पाँच आज्ञा में रहना, जितना रह पाओ उतना। कम रह पाओ तो प्रतिक्रमण करना, कि 'दादा! इन संयोगों के कारण ठीक से नहीं रह पाती इसलिए फिर जब दादा पूछें कि, 'आज्ञा में कितना रहती हो?' तब कहती हो, 'साहब, सभी में'। सभी में कैसे रहती हो? तब कहना, 'जितना रह पाऊँ उतना रहती हूँ और नहीं रह पाती उसके लिए प्रतिक्रमण करती हूँ, फिर अब रहा क्या मेरे पास?

हाँ! मुझे जवाब देना। भले ही इसे उद्दंडता कहा जाए लेकिन मुझे जवाब देना क्योंकि मेरा सिखाया हुआ है।

लेकिन भीतर में जान-बूझकर नाटक नहीं करना। आप सहज रूप से, सिन्सियरली सब कुछ करना। नहीं रह पाओ तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन नहीं रह पाओ तो प्रतिक्रमण करना।

आज्ञा से होती है प्रगति तेज़ी से

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्त करने के बाद हम महात्माओं की जो प्रगति होती है, उस प्रगति की स्पीड किस पर आधारित है? क्या करने पर तेज़ी से प्रगति होगी?

दादाश्री : पाँच आज्ञा का पालन करने से बहुत तेज़ी से प्रगति होती है और पाँच आज्ञा ही उसका कारण है। पाँच आज्ञा का पालन करने से आवरण टूटते जाते हैं और शक्तियाँ प्रकट होती जाती हैं। जो अव्यक्त शक्ति है, वह व्यक्त होती जाती है। पाँच आज्ञा का पालन करने से ऐश्वर्य व्यक्त होता है। बहुत प्रकार की शक्तियाँ प्रकट होती है। आज्ञापालन पर आधारित है।

हमारी आज्ञा में सिन्सियर रहना तो सब से बड़ा गुण है। जो हमारी आज्ञापालन करने से अबुध हो जाए, वह तो हमारे जैसा ही हो जाएगा न! लेकिन जब तक आज्ञा का पालन करता है तब तक। आज्ञा में बदलाव नहीं होना चाहिए तो फिर कोई परेशानी नहीं आएगी।

अगर इस ज्ञान में बारह महीने तक सिन्सियर रहे तो सारी कमज़ोरियाँ चली जाएँगी।

सिन्सियरली आज्ञापालन से, काम निकाल लो

यदि अंदर क्लियरनेस (स्पष्टता) है तो हमारा एक वाक्य भी इतना वचनबल वाला है कि ज़िंदगीभर भूल नहीं पाओगे।

प्रश्नकर्ता : क्लियरनेस अर्थात् कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : क्लियरनेस अर्थात् सिन्सियरिटी। जब यहाँ सत्संग में बैठे हों तब अन्य कोई विचार नहीं आना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यह सब यहीं पर सुनने को मिला दादा। 'सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी' का पूरा अर्थ यहीं पर सुनने को मिला।

दादाश्री : हाँ! सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी

मोक्ष के मुख्य कारण हैं। ज्ञान लेने के बाद दोनों गुण संपूर्ण रूप से उत्पन्न हो सकते हैं 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरैलिटी' सिर्फ ये दो ही शब्द पूर्ण रूप से सीख जाओगे तो सब कुछ कम्प्लीट (पूर्ण) हो जाएगा!

स्वरूप के लक्ष के अलावा और कुछ नहीं चाहिए

हमें अब ज्ञान के अलावा और कुछ भी नहीं चाहिए। चंदू का, जो कुछ पौद्गलिक माल है, चंदू के व्यवस्थित में जो हो, वह भले ही हो। हमें कुछ भी नहीं चाहिए। इस संसार की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए। लेकिन 'मुझे' अर्थात् किसे? ऐसा तय करके बोलना चाहिए। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', और चंदूभाई को जो चाहिए, वह भले ही हो, उसमें मुझे हर्ज नहीं। और दूसरी जो चीज़ें चाहिए, वे चंदूभाई को चाहिए फिर वह कुछ ज़्यादा नहीं है न। व्यवस्थित में जो हो वह भले ही हो और न हो तो कुछ नहीं। क्योंकि वह एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित ही है। उससे आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। चंदूभाई मन में सोच सकते हैं, उनके सोचने पर आपको कोई आपत्ति नहीं उठानी है। लेकिन अगर भाव होगा न कि, 'नहीं चाहिए,' वह सिन्सियरिटी होगी न, तो फिर कोई भी कर्म नहीं चिपकेगा। अगर कोई सुबह पाँच बार बोले कि, 'इस संसार की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए'। मुझे अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा'। 'मुझे कोई भी चीज़ नहीं चाहिए', पाँच बार इस तरह बोलकर उसके प्रति सिन्सियर रहे तो उसे कोई भी कर्म नहीं बंधेगा। चाहे अंदर कितनी भी गड़बड़ चल रही हो फिर भी कोई कर्म नहीं बंधेगा। उसकी हम गारन्टी देते हैं।

अत: यह ऐसा विज्ञान है कि यदि आप खुद के प्रति सिन्सियर रहते हो तो कोई परेशानी नहीं आएगी! यह केवलज्ञान स्वरूपी विज्ञान है। अगर आप सिन्सियर रहोगे तो फिर आपको कुछ भी स्पर्श नहीं करेगा। अब इसमें ऐसा कुछ बहुत कठिन नहीं है। रोज़ सुबह पाँच बार बोल कर सिन्सियर रहना है।

जो खुद अपने प्रति सिन्सियर रहता है, उसे ज्ञानी मिलें या न मिलें फिर भी परमात्मा बन जाएगा। सिन्सियर अर्थात् किन्हीं भी संयोगों में कभी भी अपने ध्येय से विरुद्ध कभी भी न चले।

समझ से चढ़ सकते हैं, प्रगति के सोपान

यह मार्ग सरल है, बहुत सरल है लेकिन अब जितनी आप सेटिंग करोगे, उतना। और यदि किसी के भीतर स्वाद की किसी प्रकार की आकांक्षा रह गई हो तो मुझे बताना, उसमें हर्ज नहीं है। आकर मुझसे अकेले में कह देना कि मेरे मन में इस प्रकार का कुछ है। कुछ नहीं चाहिए, वह बात तो तय है लेकिन मन में ऐसी कहीं कुछ उलझन रहती है कि ज़रा सा तो चाहिए। ऐसा मुझे बता दोगे तो मैं उसका रास्ता बता दूँगा।

ठीक है न? सिन्सियरिटी से रह सकते हो, ऐसा है न? बस। तो फिर क्या दिक्कत है?

इससे ज़रा सा भी कच्चा-पक्का रह जाता है तो अकेले में मुझे बता देना। उसमें क्या हर्ज है। इतनी दवाई दी है तो एक शीशी और! अपने दवाखाने में सभी प्रकार की दवाईयाँ हैं लेकिन बताना चाहिए न? आपको यह साइन्स ठीक से समझ में आ गया?

प्रश्नकर्ता : कुछ-कुछ प्रयत्न किया है।

दादाश्री : हाँ! सब समझ लेना है और अन्य कोई प्रयत्न नहीं करना है। इसे समझते रहना है। रोज़ आ कर समझते जाना है। अपना यह फिट हो जाएगा तो ऑल राइट हो जाएगा।

- जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada ✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
✦ **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST

UK ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
✦ **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
✦ **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

Singapore ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand ✦ **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
✦ **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
✦ **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)

USA -Canada ✦ **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

UK ✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर भारत

हिसार **दिनांक : 22 मई** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9812022339
स्थल : श्री बूधला संत हनुमान मंदिर, ऋषि नगर, बस स्टेंड के पास, हिसार.

सोनीपत **दिनांक : 23 मई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9728310007
स्थल : ओफिसर कोलोनी, धी सोनीपत को.ओ. सुगर मील, सोनीपत.

फरीदाबाद **दिनांक : 24 मई** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9501009538
स्थल : सेंट्रल पार्क, SRS मॉल के पास, सेक्टर-12, बाटा चौक मेट्रो स्टेशन के पीछे, पिल्लर नंबर 823, फरीदाबाद.

दिल्ली-महिपालपुर **दिनांक : 25 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9717884265
स्थल : K2/728B, ताराचंद कॉलोनी, माता चौक के पास, महिपालपुर एक्सटेंशन, नई दिल्ली.

दिल्ली-सैनिक नगर **दिनांक : 25 मई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9810887780
स्थल : घर नं. B-102, सैनिक नगर, मेट्रो पिल्लर नं 741, नवादा मेट्रो स्टेशन के पास, पश्चिमी दिल्ली.

दादावाणी

दिल्ली-शाहदरा **दिनांक : 26 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9999103406
स्थल : जैन स्थानक, बलबीर नगर, मेईन लोनी रोड, शाहदरा, पूर्वी दिल्ली.

दिल्ली-पश्चिम विहार **दिनांक : 26 मई** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9999533946
स्थल : महाराजा अग्रसेन भवन, पट्रोल पंम्प के पास, ज्वाला हेरी मार्केट, पश्चिम विहार.

दिल्ली-शास्त्री नगर **दिनांक : 27 मई** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9899525486
स्थल : L/265/2, ललिता स्कूल के पास, शास्त्री नगर.

दिल्ली-पीतमपुरा **दिनांक : 27 मई** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : लॉरेल हाई स्कूल, महाराजा अग्रसेन भवन के पास, फिरनी मार्ग, पीतमपुरा.

बिहार

बेतिया **दिनांक : 5 जून** **समय :** दोपहर 3-30 से 6-30 **संपर्क :** 9069273543
स्थल : देवराहा सत्संग आश्रम, BSNL ऑफिस के पास, शिखा फोटो स्टेट के सामने, कोइरीटोला, बेतिया.

झखरा **दिनांक : 6 जून** **समय :** सुबह 9 से 1 **संपर्क :** 8051999949
स्थल : ग्राम पोस्ट - झखरा, Via थाना जगदीशपुर, जिल्ला - पश्चिमी चंपारण.

सरेया **दिनांक : 6 जून** **समय :** दोपहर 3-30 से 6-30 **संपर्क :** 9069273543
स्थल : उमा नाथ पंचशिव मंदिर, ग्राम पोस्ट- सरेया, ओझवलिया, Via नवकाटोला, बेतिया, थाना - बैरिया, पश्चिमी चंपारण.

महाराष्ट्र

नागपुर **दिनांक : 9 जून** **समय :** शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क :** 9970059233
स्थल : श्री कच्छी विशा ओशवाल भवन, अनाथ विद्यार्थी गृह, लकडगंज, नागपुर.

अमरावती **दिनांक : 10 जून** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9422335982
स्थल : दादा भगवान सत्संग केन्द्र, कॉर्पोरेशन बेंक के नीचे, भारतीय महाविद्यालय के पास, राजापेठ, अमरावती.

दरियापुर **दिनांक : 12 जून** **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 8766516497
स्थल : शेतकरी सदन, अकोट रोड, बनोसा, दरियापुर.

अकोला **दिनांक : 13 जून** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9422403002
स्थल : ऑफिसर क्लब, सिविल लाइन, एस. ए. कोलेज के सामने, अकोला.

जलगाँव **दिनांक : 14 जून** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 8806869874
स्थल : ओमकार रिसोर्ट्स, DSP चौक, HDFC बेंक के पास, महाबल रोड, जलगाँव.

शिरपूर **दिनांक : 15 जून** **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 8856962916
स्थल : वराचे गांव, श्री वेंकटेश बालाजी मंदिर, गुजराथी गली, शिरपूर.

औरंगाबाद **दिनांक : 16 जून** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : प्लाट नंबर-74, N3, CIDCO, हाईकोर्ट के पास, जालना रोड, औरंगाबाद.

नासिक **दिनांक : 17 जून** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9325074635
स्थल : आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी, नासिक.

गोवा	दि : 8-9 जून	संपर्क : 8698745655	ग्वालियर	दि : 20 जुलाई	संपर्क : 9425712481
बेलगाम	दि : 10-11 जून	संपर्क : 9945894202	उज्जैन	दि : 21 जुलाई	संपर्क : 9425195647
निपाणी	दि : 12 जून	संपर्क : 9902346946	इंदौर	दि : 22-23 जुलाई	संपर्क : 8319971247
महालिंगपुर	दि : 13 जून	संपर्क : 9741797501	अंजड	दि : 24 जुलाई	संपर्क : 9617153253
धारवाड	दि : 14 जून	संपर्क : 9480370961	खरगोन	दि : 25 जुलाई	संपर्क : 9425643302
हुबली	दि : 15 जून	संपर्क : 9513216111	जबलपुर	दि : 26-27 जुलाई	संपर्क : 9425160428
बेंगलुरु	दि : 16-17 जून	संपर्क : 9590979099	भोपाल	दि : 28-29 जुलाई	संपर्क : 9826926444

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

सेवार्थी शिविर

1-3 जून (शुक्र - रवि) - **सुबह में विभिन्न कार्यक्रम,** शाम 4-30 से 7 - **पूज्यश्री सत्संग**

सूचना : अडालज में हो रही इस शिबिर में जो महात्मा अपने सत्संग सेन्टर में साल भर नियमित सेवा दे रहे है या फिर जन्म जयंती, प्राणप्रतिष्ठा जैसे दो बड़े कार्यक्रम में सेवा दी हो, ऐसे महात्मा जुड़ सकते है। इस शिविर में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन अपने सेन्टर द्वारा होगा, उसकी जानकारी कुछ ही दीनों में आपके सेन्टर पर दी जाएगी।

8 जुलाई (रवि) - **पू. नीरुमा का 50वाँ ज्ञानदिन पूरे विश्वभर के सभी सेन्टरों में मनाया जाएगा**

26 अगस्त (रवि) - **रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

1 सितम्बर (शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **2 सितम्बर** (रवि) सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

2 सितम्बर (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

3 सितम्बर (सोम) - रात 10 से 12 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

5 सितम्बर (बुध) सुबह 9 बजे से **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**

6 से 13 सितम्बर (गुरु से गुरु) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (उ.) पर सत्संग पारायण**

वापी

21 व 23 मई (सोम व बुध) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **22 मई** (मंगल) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

स्थल : VIA ग्राउन्ड, GIDC चार रस्ता, वापी, जि. - वलसाड (गुजरात). **संपर्क :** 9924343245

पटना

9 जून (शनि) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **10 जून** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : रविन्द्र भवन, वीरचंद पटेल पथ, पटना सर्किट हाउस के सामने, पटना. **संपर्क :** 7352723132

11 जून (सोम) शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : अग्रसेन भवन होल, दादीजी मंदिर, बेंक रोड, गांधी मैदान, पटना.

वाराणसी

12 जून (मंगल) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **13 जून** (बुध) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : श्री नागरी नाटक मंडली, कबीर चौरा चौक, वाराणसी. **संपर्क :** 7905794250

14 जून (गुरु) शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : गांधी अध्ययन पीठ, गेट नं.3, इंग्लिशिया लाइन क्रोसिंग, वाराणसी. **संपर्क :** 9454365491

दिल्ली

16 जून (शनि) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **17 जून** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली. (अधिक जानकारी के लिए - 9811332206, 9999533946 पर संपर्क करे)

Pujya Deepakbhai's USA Satsang Schedule 2018

Contact no. for all centers in USA : **1-877-505-DADA (3232)** & email for USA - **info@us.dadabhagwan.org**

Date	City	Session Title	Contact No.
2-3 Jul	San Jose, CA	Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1024
7-8 Jul	Dallas, TX	Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1026
10-11 Jul	Austin, TX	Aptaputra Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1032
12 Jul	Johnston	Aptaputra Satsang	1-515-240-3494
18-19 Jul	Columbia, SC	Aptaputra Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1035
23-28 Jul	Jacksonville, FL	GP Shibir	Extn. 10
27 Jul	Jacksonville, FL	GP Day	
31 Jul-2Aug	Maryland/DC	Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1010
7-8 Aug	New York, NY	Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1021
10-11 Aug	New Jersey	Satsang - Gnan Vidhi	Extn. 1020

मई 2018
वर्ष-13 अंक-7
अखंड क्रमांक - 151

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2017
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

जगत् को जीतने के लिए चाहिए सिन्सियारिटी

सुबह-सुबह तय कर चाहिए कि 'मुझे इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ नहीं चाहिए', और बाद में उसके प्रति सिन्सियर रहना है। जितना तू सिन्सियर, उतनी ही तेरी जागृति। यह हम तुझे सूत्र के रूप में दे रहे हैं। इसमें जितनी सिन्सियारिटी उतना ही तेरा खुद का (काम) होगा और यह सिन्सियारिटी तो ठेठ मोक्ष की ओर ले जाएगी। एक बार तू सिन्सियर हो जा। जितनी चीज़ों के प्रति तू सिन्सियर, उतनी चीज़ों को जीत लिया और जितनी चीज़ों के प्रति अन्सिन्सियर, उतनी को नहीं जीत पाए हो। इसलिए अगर सभी जगह सिन्सियर हो जाओगे तो आप जीत जाओगे! इस जगत् को जीतना है। जगत् को जीत लोगे तभी मोक्ष में जा पाओगे। जगत् को जीते बगैर कोई मोक्ष में नहीं जाने देगा।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.